SMALL IS THE NEW BIG

- Ankur Sahu

यह मेरे गाँधी फ़ेलोशिप में व्यतीत किये हुए नौ महीने की यात्रा के बारे में है | उतार , चढाव और सीख से भरी इस यात्रा में हर पल कुछ नया ही मिला है | इसकी हर तस्वीर में एक सन्देश है , एक प्रेरणा है जिसने मेरे अन्दर बदलाव को उन्मुख किया|

प्रेरणा

एक युवा जो सपना देखता है क्या वो हमेशा पूरे हो पाते है , ये प्रश्न मेरा खुद से भी था और मै इसे देख पाया अपनी जिंदगी में और जवाब है ‘नहीं ’ | युवाओ के साथ काम करने की इच्छा और अपने उद्देश्य को पूरा करने की उमंग मुझे यहाँ लेकर आई |

यात्रा का अभ्युदय

बूटकैंप

कार्यशाला

फील्ड सपोर्ट

डी-ब्रीफ

कम्युनिटी इमर्शन

लीडरशिप कर्रिकुलम

बूटकैंप

एक छोटी मछली जब बड़े तालाब में आती है तो डर रहता है की बड़ी मछलियो के बीच रह पायेगी या नहीं | कुछ समझ में भी नहीं आ रहा था क्योकि कंप्यूटर साइंस के कोड्स के बीच में ये सब बाते जगह इतनी जल्दी कैसे बना पाते | पर बूटकैंप के आठ दिनों मे जो सिखने को मिला उनसे यह तो मालूम चल गया की अंकुर तू जो पेड़ बनना चाहता है उसमे अब पत्तिया लगने लगी है

फील्ड सपोर्ट

दिवास्वपन देखना बंद करके जब सच में फील्ड पर काम करना पड़ता है तब समझ आती है मुश्किलें, मेरे सामने भी आई टीचर आपसे सहमत नहीं, बच्चे पढ़ाने नहीं दे रहे आदि | पर यहाँ से प्लानिंग का महत्व समझ आ गया और जो योग्यता मुझमे विकसित हुई वो है कम्युनिकेशन , IWA , NVC और रिस्क लेने की छमता |

डी-ब्रीफ

मुझे अपने किसी भी प्रॉब्लम का हल जानने का सबसे अच्छा सेशन'डी-ब्रीफ' अपने पुरे दिन के काम का अवलोकन करके उस बात को अपने समूह के सामने रखना मेरे लिए बड़ी चुनौती रही | पर अपने काम का अवलोकन करके हर दिन की प्लानिंग करना व अपनी प्रॉब्लम के लिए दुसरो के सुझाव को ग्रहण करना अब योग्यता है

कम्युनिटी इमर्शन

एक अविस्मरणीय अनुभव, पहली बार अपनी सुविधाओ की चीजो से दूर रहना दो दिन तक भूखा रहना, भाषा न समझ पाना पर इन सबके बाद भी काम करने की उम्मीद कहा से आती थी आज भी सोचता हू | धैर्य और IWA के कौशल की पूरे एक महीने अभ्यास के बाद अब यह मुझे हर जगह मदद कर रहा है |

कार्यशाला

शिक्षक कार्यशालाओ के दौरान कार्यशाला में सेशन लेना मेरा फ़ेलोशिप में अभी तक का सबसे शानदार अनुभव है, कार्यशालाओ में जो प्लान शेयर करते है उस समय सारे शिक्षक सहमत पर विद्यालय जाते ही कैसे असहमत होते है और फिर से उन्हें उन प्लान पर सहमत करना सबसे कठिन काम | पर कार्यशाला के माध्यम से अपने अन्दर फैसिलिटेशन को लेकर जो डर था वो अब नहीं है |

नवाचार

- डिजिटल क्लासरूम
- जनसहयोग से पानी की टंकी बनवाना
- भाषा प्रयोगशाला

प्राथमिक विद्यालय में नवाचार

नावड़ा में डिजिटल क्लास रूम शुरू

पत्रिका सोशल प्राइड

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

rajasthanpatrika.com

सेमारी. पंचायत समिति के प्राथमिक विद्यालय नावड़ा में बालकों को डिजिटल क्लास रूम से शिक्षा मिलेगी। आदिवासी परिवेश में कक्षा कक्ष अध्यापन में नवाचार की जरूरत महसूस करते हुए नावड़ा गांव में प्रधानाध्यापक भगवानलाल पटेल एवं पिरामल फैलो अंकुर साहू ने योजना के तहत कक्षा कक्ष अध्यापन में बच्चों एवं शिक्षकों की रुचि जगाने के लिए डिजिटल क्लास रूम की संकल्पना को साकार किया है।

प्रधानाध्यापक पटेल का कहना है कि बच्चे अपने परिवेश की चीजों से ज्यादा से ज्यादा सीख पाते हैं एवं एक ही पद्धति से पढ़ाने पर वह नीरस हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि यदि हम बालक को कक्षा में रुचि सहीत बैठा दें तो हम परीक्षा परिणाम में बेहतर स्थिति प्राप्त कर सकते हैं।

डिजिटल क्लासरूम में पढ़ते बच्चे। सेमारी

आसान होगा पढ़ना और सबक को समझना

अंकुर साहू ने कहा कि कक्षा कक्ष अध्यापन में निर्देशात्मक पद्धति को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल क्लास रूम उपयोगी है। इसके माध्यम से विभिन्न स्तर के बालकों को पढ़ाना आसान हो रहा है। ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी सुरेन्द्र कुमार आमेटा ने नई पहल की सराहना करते हुए सभी विद्यालयों को उपलब्ध संसाधन के अनुसार डिजिटल क्लास रूम स्थापित करने की अपील की। यह सराड़ा एवं सेमारी तहसील का प्रथम डिजिटल क्लास रूम है। इस मौके पर अध्यापक मुकेश जैन, चंद्रा मीणा एवं बाबूलाल आदि मौजूद थे।

डिजिटल क्लासरूम

क्लास में शिक्षक की कमी की वजह से विद्यार्थियों की पढाई में फर्क न पड़े इसको ध्यान में रखकर डिजिटल क्लासरूम शुरू किया जिसका लाभ 119 छात्र व 4 शिक्षक को मिल रहा है | अब सराडा व सेमारी ब्लाक के 40 विद्यालयों में कैसे स्थापित करे यह भविष्य की कार्य योजना है |

पानी की टंकी

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मायर में पीने के पानी की समस्या विगत तीन वर्षों से थी पर उसका कोई हल नहीं हो पा रहा था | SMC की मीटिंग में उनके सामने सभी से 500 रु देने का प्रस्ताव रखा जिसे सभी ने माना | SMC और बालसभा के सहयोग से 5000 लीटर की पानी की टंकी अब वहा है, विडियो लिंक –

https://m.youtube.com/watch?v=tn_egat1GtM

भाषा प्रयोगशाला

नॉन रीडर छात्रो को रीडर बनाना और स्टूडेंट लर्निंग आउटकम को बढ़ने के लिए राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मायर में भाषा प्रयोगशाला बनाई जिसमे वहा के 43 छात्रो का हिन्दी व गणित में स्तर सुधारने के लिए TLM , वर्कशीट व शिक्षको के माध्यम से एक महीने रीडर बनाया | डी-ब्रीफ में फेलो साथी महेंद्र की सलाह से यह संभव हुआ |

NEVER FORGET WHY YOU ARE STARTED.

JOURNEY CONTINUE...